शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ३६ : नई दिल्ली : 11-17 दिसम्बर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा करते हुए भीलवाड़ा के निकट पुर पधार गए हैं। स्थान-स्थान पर अहिंसा यात्रा का भव्य स्वागत हो रहा है। आचार्यवर मेवाड़ के इस अंचल में सघन परिभ्रमण कर रहे हैं। जहां एक भी श्रद्धा का घर है, उसके लिए पूज्यप्रवर दूरी को गौण कर रहे हैं। भीलवाड़ा और चित्तौड़ जिले के इस संभाग में अद्भुत धर्म जागृति देखने को मिल रही है।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

स्वास्थ्य समीक्षा और एकान्तवास (881)

"सन् 1997 का मई मास सम्पन्नता पर है। मास के अन्तिम सप्ताह में जनता के बीच कम रहा। इच्छा होने पर भी अस्वस्थता के कारण प्रवचन में उपस्थित नहीं हो सका। डॉक्टरों की राय के अनुसार अब भी विश्राम की अपेक्षा है। जनता दर्शन करने की आशा लेकर आती है। मैं अन्दर रहता हूं तो उसे परेशानी होती है। जिस क्षण जनता की परेशानी मेरी परेशानी बन जाती है, मैं भीतर नहीं रह सकता। अपनी परेशानी मिटाने के लिए मैं जनता के बीच पहुंच जाता हूं। उस समय भाई-बहनों को जो प्रसन्नता होती है, उसका बयान नहीं किया जा सकता। यहां आनेवाले लोगों को प्रसन्न देखकर मुझे सन्तोष का अनुभव होता है।

30 मई, शुक्रवार। इस बार लाडनूं में कोष्ठबद्धता की कठिनाई पैदा हुई। ईसबगूल का प्रयोग किया। एक बार कुछ ठीक लगा, फिर तो उसने भी काम करना बन्द कर दिया। अनेक उपाय किए। कई प्रकार की चिकित्सा चली। पर सन्तोष नहीं हुआ। डॉ. जेठमल मरोठी ने बराबर ध्यान दिया। और भी अनेक डॉक्टर आए। आखिर बीकानेर के प्रसिद्ध फिजीशियन डॉक्टर एच. एल. मिश्रा आए। उन्होंने देखा। पूरी जांच की। इलाज शुरू किया। अब तीन दिन से अच्छा लाभ मिल रहा है। ठीक दो समय उत्सर्जन होता है। ऐसा क्रम चलता रहा तो बिल्कुल ठीक हो जाएगा। डॉ. मिश्रा हमारी प्रकृति से मेल खानेवाले हैं। थोड़ी दवा देते हैं। आत्मविश्वास की भाषा बोलते हैं। अच्छा लगता है। बीच में जुकाम और कफ के कारण श्वास की गड़बड़ी हो गई। क्रमशः ठीक है। विश्वास बन रहा है कि ठीक हो जाएगा। सन्तोष है। प्रसन्नता है। कमजोरी जरूर है। ठीक हो जाएगा। डॉ. मरोठी दायित्वशील व्यक्ति है। पूरा काम कर रहा है। अस्तु...।

1 जून, रविवार। आज से पांच दिवसीय अणुव्रत प्रचेता प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। तीन दिन पूर्व प्रेक्षाध्यान शिविर की शुरूआत हुई। इस शिविर में एक सौ पचीस भाई-बहनों की संभागिता है। दोनों शिविरों के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए मैंने कहा 'अभी यहां अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान दोनों के शिविर चल रहे हैं। अणुव्रत नैतिक मूल्यों के प्रति विश्वास जगाता है और प्रेक्षाध्यान उन्हें प्रयोग पद्धति से अनुभव के स्तर पर ले जाता है। एक-एक दो मिलकर शक्ति बन जाते हैं। दोनों का उद्देश्य अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करना है। शिविर में आने का उद्देश्य स्वास्थ्य-सुविधा तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। अणुव्रत प्रचेता की अर्हता यह होनी चाहिए कि वह अणुव्रत को गहराई से समझे और परिस्थिति के साथ सामंजस्य व सन्तुलन बिठाकर उसे नैतिक मूल्यों के अनुकूल बनाए। इन माध्यमों से हम सबको नैतिक बना ही देंगे, यह अतिकल्पना है। ऐसे कार्यक्रमों से वातावरण बनता है और नैतिक तथा आध्यात्मिक कदमों को गति मिलती है, यह मूल्यों के विकास का संकेत है।'

प्रासंगिक रूप में राजनीति में हो रहे मूल्यों के क्षरण की चर्चा करते हुए मैंने कहा 'हम यह भी चाहते हैं कि राजनीति में मूल्यों का प्रवेश हो जाए तो उसका चेहरा भी साफ-सुथरा रह सकेगा। इस क्षेत्र में कार्यरत अधिकारी और कर्मचारी रिश्वत नहीं लेंगे, धोखाधड़ी नहीं करेंगे तो जनता में उनके प्रति विश्वास बढ़ेगा। अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान ऐसे उपक्रम हैं, जो व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र सबके लिए कल्याणकारी हैं।'

2 जून, सोमवार। आज प्रातः पुलिस महानिदेशक श्री देवेन्द्रसिंह, उपमहानिदेशक श्री हरीश मीणा तथा जिला पुलिस अधीक्षक श्री नरेन्द्र पाटनी दर्शन करने आए। पुलिस महानिदेशक ने हमारे गंगाशहर-प्रवास के लिए प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा 'आचार्यजी! आपके आगमन से गंगाशहर पुलिस स्टेशन व्यसनमुक्त बन गया, यह उल्लेखनीय बात है।' देश में बढ़ते हुए अपराधों की चर्चा करते हुए श्री सिंह ने कहा 'छोटी-छोटी बातों को लेकर आवेश इतना बढ़ जाता है कि झगड़े तो क्या, हत्याएं भी हो जाती हैं। धर्म करने के बावजूद पता नहीं मनुष्य में परिवर्तन क्यों नहीं आ रहा है?'

श्री सिंह की जिज्ञासा को समाहित करने के लिए महाप्रज्ञजी बोले 'व्यक्ति किसी भी महकमे का हो, सबसे पहले उसे परिवर्तन का लक्ष्य बनाना होगा। बिना लक्ष्य के कोई काम पूरा नहीं हो सकता। हमने बहुत वर्षों पहले पुलिस अकादमी, जयपुर में अणुव्रत एवं प्रेक्षाध्यान के शिविर लगाए थे। पांच दिनों के प्रयोग से जो परिवर्तन आए, सबको आश्चर्य में डालनेवाले थे। जिन लोगों ने शिविर में भाग लिया, उनका शिविर से पहले और शिविर के बाद में भी विधिवत परीक्षण किया गया। शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रिपोर्ट वास्तव में ही प्रगति की सूचक थी। उस शिविर में भाग लेनेवाले कई पुलिस अधिकारी आज भी मिलते हैं तो कहते हैं 'आपने हमारी दिशा बदल दी और हम सदा-सदा के लिए व्यसनमुक्त हो गए।' हमें आज भी यह आवश्यक प्रतीत होता है कि पुलिस के लिए निर्धारित प्रशिक्षण के साथ अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान का भी प्रशिक्षण दिया जाए ताकि श्रेष्ठ पुलिस व्यक्तित्वों का निर्माण हो सके।'

महाप्रज्ञजी की बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा 'गंगाशहर का पुलिस स्टेशन हमारे अत्यधिक निकट है। वह व्यसनमुक्त बना, यह अनुकरणीय कार्य है। अभी कुछ समय पहले लाडनूं में पुलिसकर्मियों का प्रशिक्षण शिविर था। उसके परिणाम भी बहुत सुखद रहे। प्रेक्षाध्यान और अणुव्रत के ये शिविर विभिन्न वर्गों के लिए लाडनूं, दिल्ली और अजमेर में चलाए जा रहे हैं। यद्यपि मानव-मस्तिष्क को बदलना एक चुनौतीभरा काम है क्योंकि सारे अपराध मानव-मस्तिष्क की ही उपज होते हैं, जिन्हें बदलने का पुरुषार्थ करना हमारा दायित्व है। प्रसन्नता की बात है हमें अच्छी सफलता मिल रही है। साधारण जनता से लेकर विद्यार्थियों, अध्यापकों, पुलिसकर्मियों और सेना के जवानों तक को प्रशिक्षित करने का हमारा प्रयास चालू है।'

5 जून, गुरुवार। आज प्रातः पंच दिवसीय अणुव्रत प्रचेता शिविर का समापन समारोह आयोजित था। श्री दासगौड़ा, श्रीमती अलका सांखला, डॉ. सुधा, आचार्य धर्मेन्द्र, श्री साधुशरणसिंह 'सुमन' आदि अनेक व्यक्तियों ने अपने अनुभव प्रस्तुत किए। महाप्रज्ञजी ने अणुव्रत प्रचेता के मूल आधार अध्यात्म और नैतिकता की चर्चा करते हुए प्रचेता की तीन श्रेणियां निर्धारित कीं

1. अणुव्रत के क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करनेवाले।
2. अणुव्रत के सिद्धान्त और दर्शन को जीवन की प्रयोगशाला में उतारकर अपने अनुभवों से दूसरों को लाभान्वित करनेवाले।
3. यथावश्यक रूप में अहिंसात्मक प्रतिरोध में अपनी क्षमता का उपयोग करनेवाले।

मैंने अपने प्रवचन में कहा 'अणुव्रत प्रचेता की अर्हता निर्धारित की गई है। उसके पांच सूत्र हैं प्रबुद्धता, प्रवक्तृता, प्रयोक्तृता, प्रतिरोध क्षमता और प्रभावकता। ये पांच विशेषताएं जिसमें होंगी, वही प्रचेता बन सकेगा। इस आधार पर अणुव्रत प्रचेता का संकल्प स्वीकार करनेवालों का दायित्व है कि वे निरन्तर इस दिशा में आगे बढ़ने का लक्ष्य बनाएं। प्रचेताओं को अनवरत पुरुषार्थ करते रहना है, जिससे हिंसा आदि बुराइयां मनुष्य पर हावी न हों। बुरा व्यक्ति जब अपनी बुराई नहीं छोड़ रहा है तो अच्छा व्यक्ति अपनी अच्छाई क्यों छोड़े। मूल्यों के प्रति निराश या हताश होना अच्छी स्थिति नहीं है। सूर्य प्रतिदिन उदित होता है और अपना प्रकाश फैलाता है। इसी प्रकार अंधेरा भी हमेशा आता है। अंधेरा आता है, इसलिए सूर्य प्रकाश न फैलाए, इसका कोई औचित्य नहीं है। सूर्य की तरह हमें भी नैतिक मूल्यों का प्रकाश निरन्तर फैलाते रहना है।'

6 जून, शुक्रवार। आज से राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति का अधिवेशन प्रारंभ हुआ। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पूर्णचन्द बड़ाला ने समिति के कार्यक्रमों की विस्तार से अवगति दी। आज के कार्यक्रम में प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से पुलिस अधीक्षक श्री नरेन्द्र पाटनी का अभिनन्दन किया गया। ज्ञातव्य है कि श्री पाटनी अब तक पुलिस अधीक्षक के पद पर बीकानेर में कार्यरत थे। हमारे गंगाशहर आगमन के अवसर पर उन्होंने गंगाशहर थाने को नशामुक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री पाटनी अब पदोन्नत होकर जयपुर जा रहे हैं।

अपने वक्तव्य में श्री पाटनी ने कहा 'मैंने सिर्फ अपने दायित्व का निर्माण किया है और कुछ नहीं किया। जब पूज्यजनों के यहां पधारने की बात सुनी तब गंगाशहर थाने में कार्यरत व्यक्तियों को शराब छोड़ने की प्रेरणा दी। पूज्यजनों की शक्ति से ही सारा काम हुआ है। यहां के सभी पुलिसकर्मियों ने अपनी भावना से व्यसनों का त्याग किया। इसीलिए इस एक माह में यहां की कोई शिकायत मेरे पास नहीं आई। अब यहां से मेरा स्थानान्तरण हो रहा है। किन्तु मैं जहां भी रहूंगा, अपना कार्य करता रहूंगा।'

प्रवचन सभा को सम्बोधित करते हुए मैंने कहा 'हमारा लक्ष्य है समाज को बदलना। प्रश्न है कैसे बदलें और कब बदलें? मेर मान्यता है कि पहले बदलाव की बात समझ में आए और उसमें रस पैदा हो, फिर बदलाव स्वतः हो जाएगा। परिवर्तन के लिए सबसे पहले जीवनशैली को बदलना होगा। अणुव्रत एक जीवनशैली है। इस जीवनशैली के कुछ छोटे-छोटे सूत्र हैं

- मैं अनावश्यक हिंसा नहीं करूंगा।
- मैं अति संग्रह नहीं करूंगा।
- मैं व्यक्तिगत भोगोपभोग की सीमा करूंगा।
- मैं किसी भी मनुष्य के प्रति घृणापूर्व व्यवहार नहीं करूंगा।
- मैं सबके साथ समभाव का बर्ताव करूंगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊंगा।
- मैं व्यवसाय एवं व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा।

ये छोटे-छोटे संकल्प स्वस्थ जीवनशैली के सूत्र हैं। एक-एक व्यक्ति स्वस्थ बनेगा तो समाज स्वतः स्वस्थ बन जाएगा। आज भी अच्छे व्यक्तियों की कमी नहीं है, पर अच्छे व्यक्तियों का संगठन नहीं है। अपेक्षा है, अच्छाइयां संगठित होकर बुराइयों से लोहा लें।'

7 जून, शनिवार। दस दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन समारोह। यह शिविर बाफणा विद्यालय में आयोजित हुआ था। शिविरार्थी भाई-बहनों ने अपने अनुभव सुनाए, उसमें समय कुछ अधिक लग गया। परिषद हमें सुनना चाहती थी, इसलिए थोड़ी-सी हलचल होने लगी। करणीय कार्य पूरा होने के बाद मैंने कहा 'अभी शिविरार्थियों ने अपने अनुभव प्रस्तुत किए। एक दृष्टि से वह सजीव व्याख्यान था। श्रोताओं में प्रवचन सुनने की जो उत्सुकता है, उसे मैं समझता हूं। पर अवश्य करणीय काम करने ही होते हैं। कुछ भी किया जाता है, समय तो लगता ही है। वह समय सार्थक और उपयोगी बने, यह उद्देश्य रखा जाए। जिन व्यक्तियों ने शिविर में दस दिन का समय नियोजित किया, उन्हें जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण उपलब्ध हुआ है। ज्ञान और ध्यान की गहराई में उतरनेवाला व्यक्ति ही सम्यक् दृष्टिकोण को उपलब्ध करता है। ध्यानशिविर में भाग लेनेवाले भाई-बहनों से मैं कहना चाहता हूं कि उन्होंने जो-जो प्रयोग सीखे हैं उनका अभ्यास करते रहें। दस दिन का समय तो कुछ सीखने व समझने का होता है। निरन्तर अभ्यास करने से ही रूपान्तरण घटित हो सकता है।'

8 जून, रविवार। गंगाशहर की ओर प्रस्थान करते समय मेरे सामने मुख्य लक्ष्य तीन थे साहित्य-साधना, अणुव्रत और जैन एकता। साहित्य की दृष्टि से कुछ आख्यान लिखने की मानसिकता थी तथा कुछ लघु पुस्तिकाएं तैयार करती थीं, जो किशोर पीढ़ी एवं युवा पीढ़ी के लिए उपयोगी बन सकें। अणुव्रत कार्य को सुनियोजित रूप में आगे बढ़ाने का चिन्तन था। बीकानेर संभाग जैन समाज का सघन क्षेत्र है। यहां जैन एकता की दिशा में कुछ करना चाहिए, यह मेरी अपनी सोच थी। मैंने सबसे पहले इसी काम की शुरूआत की। इसका पहला कदम था सामायिक दिवस का आयोजन।

जैन एकता के सन्दर्भ में वातावरण बनाने के लिए प्राथमिक प्रयोग के रूप में अभिनव सामायिक कराने का चिन्तन किया। तेरापंथी श्रावक-श्राविकाओं को अभिनव सामायिक का प्रयोग बहुत बार कराया जा चुका है और कभी भी कराया जा सकता है। मैं सकल जैन समाज को ऐसा प्रयोग करवाना चाहता था। इसके लिए वातावरण का निर्माण करना आवश्यक था। इस दृष्टि से हमारा इंगित पाकर गंगाशहर प्रवास व्यवस्था समिति ने जो व्यापक प्रयत्न किया, वह उल्लेखनीय है।

समिति के कार्यकर्ताओं ने आसपास के क्षेत्रों में पहुंचकर सब सम्प्रदायों के जैन लोगों से सम्पर्क स्थापित कर व्यवस्थित सूचना दी। इसका परिणाम यह हुआ कि सूर्योदय के कुछ समय बाद ही लोगों का आगमन शुरू हो गया। गंगाशहर, भीनासर और बीकानेर के अतिरिक्त अनेक निकटवर्ती क्षेत्रों के लोग आते गए और पंडाल में सुव्यवस्थित रूप में बैठते गए। देखते-देखते विशाल समवसरण का स्थान जनाकीर्ण हो गया। तेरापंथ भवन का हॉल भी खचाखच भर गया। लोगों का प्रवाह रुका नहीं था। भवन के सामने सड़क का मुख्य भाग भी काम में लिया गया। लगभग आठ-दस हजार व्यक्तियों ने एक साथ एक रूप में सामायिक का प्रयोग किया, जिसमें तेरापंथ के अलावा भी सभी सम्प्रदायों के जैन तथा कुछ अजैन भी मुखवस्त्रिका लगाकर पंक्तिबद्ध हो एक आसन में आसीन हुए। वह दृश्य इतना सुन्दर, मनोहारी और आकर्षक था कि देखते ही बनता था।

ठीक नौ बजे मैंने सामायिक प्रतिज्ञा पाठ का समुच्चारण कराया और उसके साथ ही एक विशेष अनुष्ठान के रूप में उसका क्रम आगे बढ़ा। सबसे पहले त्रिपदी वन्दना कराई गई। उसके बाद जप योग एवं ध्यान योग का प्रयोग कराया। जप का प्रयोग मैंने कराया, ध्यान का प्रयोग महाश्रमण ने कराया। जप व ध्यान के बाद स्वाध्याय योग का क्रम प्रारंभ करते हुए मैंने कहा 'आत्मा, समता और सामायिक तीनों पर्यायवाची शब्द हैं। सामायिक की साधना से समता सिद्ध होती है। सिद्धि के तीन घटक तत्त्व हैं निर्मलता, प्रकाश और गंभीरता। सामायिक निर्मलता का उपक्रम है। इससे आत्मा की मलिनता दूर होती है और अन्तःकरण की धुलाई होती है। यह आश्रव-अन्धकार को दूर कर संवर का प्रकाश फैलाती है। सामायिक क्षय-उपशम की प्रक्रिया है। इससे अन्धकार स्वतः दूर होता है और प्रकाश प्रकट हो जाता है। कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य और परपरिवाद की वृत्तियां व्यक्ति को छिछला बनाती हैं। सामायिक में इनका त्याग किया जाता है, जिससे व्यक्ति गंभीर बन जाता है। अभिनव सामायिक के प्रयोग में ये तीनों सिद्धियां चारित्र की निर्मलता, आत्मा की उज्ज्वलता और गुणों की गंभीरता निहित हैं।'

आज के कार्यक्रम में मुनि जम्बू, मुनि कीर्ति और मुनि विश्रुत, तीनों बाल मुनियों ने 'सजग बनो बीती जा रही घड़ी' गीत का संगान किया। मुनि मधुकरजी आदि सन्तों ने जैन एकता के सन्दर्भ में गीत प्रस्तुत किया। मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं था। अभिनव सामायिक का प्रयोग कराने की पूरी अनुकूलता नहीं थी, फिर भी मेरी इच्छा थी। इसलिए मैं कार्यक्रम में उपस्थित रहा और प्रयोग भी कराया। महाप्रज्ञजी, महाश्रमण और महाश्रमणी, ये सभी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सबने अच्छा क्रम चलाया।

पुस्तकालय प्रतीक है बौद्धिक समृद्धि का

वह समाज जागृत, उन्नत और प्रबुद्ध समाज कहलाता है, जिसके सदस्य ज्ञान की गंभीरता रखते हैं, जिनके चिन्तन की खिड़कियां खुली रहती हैं, जो ज्ञान के दर्पण में आत्मनिरीक्षण करते हैं और अपने व्यवहार का प्रतिबिम्ब देखते हैं। पुस्तक ज्ञानप्राप्ति का माध्यम है। किसी भी परिवार में पुस्तकों का होना उसकी संभ्रान्तता और प्रबुद्धता का प्रतीक है। इस दृष्टि से श्रावक समाज को दिशाबोध देते हुए मैंने कहा 'संस्कार-निर्माण और विचारों के विकास में साहित्य का बहुत योगदान है। समय का सही उपयोग करने में भी इसकी महती भूमिका है। सात्विक साहित्य अपने आप में एक अच्छी खुराक है। इससे मन प्रशिक्षित होता है और विचार परिष्कृत होते हैं। समाज के चेतनाशील परिवारों का दायित्व है कि वे अपने घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय अवश्य रखें, जिसमें कम-से-कम एक सौ एक (101) चुनी हुई पठनीय पुस्तकें हों।

एकान्तवास : उद्देश्य और स्पष्टीकरण

अनेक प्रयोगों के बावजूद भी अभी तक स्वास्थ्य यथेष्ट अनुकूल नहीं बना। फिर चिन्तन आया कि प्राकृतिक

चिकित्सा का प्रयोग भी देख लिया जाए। वैद्य महावीर प्रसादजी आए। उनसे परामर्श किया और निर्णय लिया। उन्होंने कहा सात दिन तक एनिमा ली जाए। कुछ दवा का प्रयोग भी किया जाए, जैसे अभयारिष्ट, त्रिफला, ईसबगूल आदि लेकर देखा जाए। पर स्थान-परिवर्तन हो। सभा भवन में जनसंकुलता ज्यादा है, अतः एकान्तवास किया जाए।

वैद्यजी का सुझाव ठीक लगा। मैंने कहा 'रोड पर मूलचन्दजी बोथरा (बीकानेर) का नवनिर्मित मकान है। स्थान खुला है। उसे देख लिया जाए। मुनि मधुकरजी गए। स्थान देखा। ठीक लगा। 8 जून, रविवार। जेठ शुक्ला तृतीया के दिन सायंकाल एकान्तवास के लिए कुछ साधुओं के साथ 'बोथरा भवन' पहुंच गए। शेष साधु महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में 'तेरापंथ भवन' में रहे।

9 जून, सोमवार। मेरी अस्वस्थता और एकान्तवास का संवाद सुनकर श्रावक समाज चिन्तित न हो जाए, इस दृष्टि से अपने एकान्तवास का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए मैंने कहा 'इस बार लाडनूं-प्रवास से ही स्वास्थ्य ठीक नहीं था। कोष्ठबद्धता और एसीडिटी के कारण बार-बार अस्वस्थता का अनुभव होता रहा। डॉ. विजय घोड़ावत की देखरेख में चिकित्सा चलती रही। डॉक्टर घोड़ावत विनम्र, सेवाभावी और समर्पित श्रावक है। उसकी वृत्ति निर्लोभ है और वह सहज शालीन व्यक्तित्व का धनी है। डॉक्टर घोड़ावत वास्तव में ही हमारी गरिमा बढ़ानेवाला है। अणुव्रत आचार संहिता के आधार पर जैसा डॉक्टर होना चाहिए, वैसा ही डॉक्टर है विजय घोड़ावत। जयपुर डॉ. डूंगरसिंह पोकरना जांच करने आए। वे उदर रोगों के विशेषज्ञ हैं। वे भी तेरापंथी हैं। उन्होंने जो उपाय सुझाए, थोड़ा अनुकूल असर दिखाया।'

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा 'गंगाशहर पहुंचते-पहुंचते दोनों कठिनाइयां अधिक बढ़ गईं। यहां डॉ. जेठमल मरोठी स्वास्थ्य की दृष्टि से पूरी जिम्मेदारी संभाले हुए हैं। समय-समय पर अन्य डॉक्टरों से परामर्श करना आदि अपेक्षित कार्यों में अच्छा श्रम कर रहे हैं। दूसरी ओर अनोपचन्द बोथरा भी प्रस्तुत सन्दर्भ में पूरी तरह जागरूक है। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उसकी रुचि है तथा वह स्वयं जानकार भी है। अस्वस्थता के समय तो वह प्रायः उपासना में रहता है। बीकानेर के सुप्रसिद्ध डॉक्टर एच.एल. मिश्रा आए। उन्होंने भी अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए। मिश्राजी देश के जाने-माने डॉक्टर हैं। वे स्वभाव से शान्त हैं तथा प्रकृति से ठंडे हैं। वे दवा बहुत कम देते हैं। इस प्रकार स्वास्थ्य का अच्छा क्रम बना, किन्तु स्थायी लाभ नहीं हो पाया।'

वर्तमान चिकित्सा की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए मैंने कहा 'अन्ततोगत्वा हमने यह निर्णय लिया कि उदर-व्याधि से छुटकारा पाने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा कराई जाए। वह चिकित्सा एकान्तवास के बिना कम संभव लगी। तेरापंथ भवन यद्यपि साताकारी है। किन्तु वहां लोगों की भीड़ लगी रहती है। इसलिए श्रावक मूलचन्दजी बोथरा के मकान में आजकल स्वास्थ्यलाभ की दृष्टि से एकान्तवास कर रहे हैं। ये माणकचन्दजी बोथरा के पुत्र हैं। इनके पिताजी ने पूज्य कालूगणी से गुरुधारणा की थी। उससे पूर्व इस परिवार की आस्था मूर्तिपूजक सम्प्रदाय में थी। मूलचन्दजी के तीन पुत्र हैं सुरेन्द्र, पदम और संजय। मूलचन्दजी के पुत्रों, पुत्रियों तथा पुत्रवधुओं में धर्म के गहरे संस्कार हैं और परिवार के सभी सदस्य श्रद्धालु हैं।'

स्वास्थ्य-मीमांसा

16 जून, सोमवार। बोथरा भवन आए आज आठ दिन हो गए। तीन दिन से मिट्टी की पट्टी, गर्म-ठंडे जल का सेंक और एनिमा चालू है। खाने में दूध, छेना, मिठाई, घी, तेल आदि प्रायः बन्द हैं। शहद तथा नीबू मिला पानी, थोड़ा-सा अन्न, सब्जी और फ्रुट्स लेने का सुझाव है। यह क्रम चालू है।

आज तारीख 16 को मौन दिवस है। प्रातः कुछ समय बात करने के बाद मौन शुरू किया। आज स्वास्थ्य कुछ ठीक लग रहा है। पर दो-चार दिन ठीक रहने से विश्वास जमे।

कल रात नींद नहीं आई। उठ-बैठ रही। सब गहरी नींद में थे। मन में आया ऐसा रहता है तो क्यों नहीं संलेखना का मार्ग अपनाया जाए। क्या करना है इस शरीर का? बहुत काम किया। अब संलेखना-संथारा हो तो अच्छा रहे। पर आज प्रातः फिर परामर्श में (डॉक्टर-वैद्यों का) यही रहा कि एक सप्ताह फिर देखा जाए।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आमेट की ओर

अनावश्यक हिंसा से बचें

२२ नवम्बर। आज मार्गवर्ती खेड़ा व बापूनगर ढाणी--इन दो गांवों में संक्षिप्त उद्‌बोधन के बाद लगभग छह किमी. का विहार कर आचार्यवर महेन्द्रगढ़ पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। वहां आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों के द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के बाद पूर्व सरपंच श्री शंकरसिंह राठौड़ ने गांव की ओर से पूज्यप्रवर का स्वागत किया। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, मंत्री मुनिश्री एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के सामयिक अभिभाषण हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'हम अहिंसा यात्रा के साथ गांवों और कस्बों में जा रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने दीर्घकालीन अहिंसा यात्रा की। वे कहा करते थे कि यात्रा के माध्यम से हिंसा के कारणों की खोज की जा रही है। वस्तुतः हिंसा को समझना आवश्यक है। हिंसा को समझे बिना उससे बच सकना संभव नहीं है।

हिंसा के तीन आयामों--आरंभजा, विरोधजा और संकल्पजा हिंसा की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'साधु हिंसा से सर्वथा विरत होता है। गृहस्थ के लिए हिंसा को पूर्ण रूप से छोड़ पाना कठिन होता है। किन्तु अनावश्यक हिंसा से तो वह बच ही सकता है। अहिंसा की अनुपालना हेतु मुनि के लिए माधुकरी भिक्षावृत्ति का विधान है। खेती-बाड़ी से स्थावर व त्रस जीवों की होने वाली हिंसा इसी का अंग है। रक्षा व प्रतिरोध हेतु होने वाली हिंसा विरोधजा हिंसा है। संकल्पजा हिंसा में न तो खेती-बाड़ी का कोई प्रश्न है, न ही प्रतिरक्षा का। इसलिए संकल्पजा हिंसा से तो हर किसी को बचना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'अहिंसक चेतना के जागरण हेतु हर व्यक्ति में अनुकंपा की चेतना जागे और हर व्यक्ति नशामुक्त जीवन जीने का अभ्यास करे। महेन्द्रगढ़ में गुरुदेव तुलसी पधारे थे। सन् २००४ में कुछ देर के लिए आचार्य महाप्रज्ञ का भी आगमन हुआ और आज हम आए हैं। यहां के सोहनजी मेहता केन्द्र की उपासना करते हैं। इनके जोड़ीदार शांतिलालजी बोरदिया (वर्तमान में मुनि शांतिप्रियजी) तो अब साधु बन गए। यहां के श्रावक हरकलालजी अच्छे श्रावक थे। उन्हें संथारे में दीक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महेन्द्रगढ़वासी अपने जीवन में शांति एवं सौहार्द की भावना विकसित करें।'

कार्यक्रम में महेन्द्रगढ़ ठिकाणे के ठाकुर प्रतापसिंह राठौड़, सरपंच श्रीमती नंदूदेवी पंवार, पूर्व सरपंच मनोहरलाल नाहर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया। स्थानीय स्कूल में मुनि पुलकितकुमारजी के वक्तव्य के बाद पूज्यवर ने नशामुक्ति का संकल्प करवाया। रात्रि में भी कार्यक्रम चला। पांच सदस्यों वाले श्रद्धा के दो घरों के महेन्द्रगढ़ के मूल बारह घरों (लगभग चालीस चौके) के लगभग पचहत्तर लोग एक दिन के प्रवास में आए। आचार्यवर ने सभी घरों का स्पर्श किया। सबमें अपूर्व उल्लास था।

गार्हस्थ्य में भी हो आत्मिक धर्म की आराधना

२३ नवम्बर। आज प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने सोनियाणा के लिए विहार किया। मार्ग में छोटाखेड़ा भुणास में ग्रामीणों को पूज्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। मार्ग के दोनों ओर स्थित सिरामिक्स टाइल्स फैक्ट्रियों के कर्मचारी पूज्यवर के दर्शन कर प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे थे। एक स्थान पर बड़ी संख्या में एकत्रित कर्मचारियों को पूज्यवर ने नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की। अनेक व्यक्तियों ने आचार्यवर से बीड़ी, तम्बाकू आदि छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया। मातृकुंडिया बांध को भीलवाड़ा के मेजा बांध से जोड़ने वाली मेजा फीडर नहर के पार्श्ववर्ती कच्चे पथ से होते हुए १३.०१ किमी. का विहार कर आचार्यवर सोनियाणा के स्थानीय राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से ग्रामवासियों का उल्लास दर्शनीय था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में सहाड़ा क्षेत्र के विधायक श्री कैलाश त्रिवेदी, कृषि मंडी सोनियाणा के अध्यक्ष श्री विष्णुकुमार सुवालका एवं श्री शंकरसिंह राणावत ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के सातवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'गृहस्थ के लिए दो प्रकार के धर्म होते हैं--आत्मिक और लौकिक, जबकि साधु के लिए एक आत्मिक धर्म ही होता है। संवर और निर्जरा की साधना आत्मिक धर्म है। जिसके द्वारा आत्मा की अनुकंपा, रक्षा, कल्याण और शुद्धि होती है, वह आत्मिक धर्म है। जिसके द्वारा शरीर, परिवार, समाज आदि का पोषण होता है और जिसे लोक व्यवहार में अच्छा माना जाता है, वह लौकिक धर्म है। गार्हस्थ्य में केवल आत्मिक धर्म से काम नहीं चलता। गृहस्थ को अपना पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्य भी निभाना होता है। यदि वह अपने इस कर्तव्य से विमुख बनता है तो कुछ कठिनाई भी हो सकती है। किन्तु गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी कुछ अंशों में संवर और निर्जरा की साधना होती रहती है तो आत्मा कल्याण की दिशा में अग्रसर हो सकती है।' पूज्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

सोनियाणा में एक तेरापंथी परिवार सहित बाईस जैन परिवार हैं। चार भाइयों का बाफणा परिवार अपने गांव में अपने आराध्य को पाकर प्रमुदित था। पूज्यवर ने सायंकालीन आहार के पश्चात सभी जैन घरों का स्पर्श किया। सभी परिवारों को पूज्यवर की उपासना का भी अवसर प्राप्त हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रम के दौरान पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर का रात्रिकालीन प्रवास श्री सुरेशजी बाफणा के निवास पर हुआ। पूज्यवर के अनुग्रह को प्राप्त कर सुरेशजी आदि परिजन हर्षविभोर थे।

एक परिवार : पांच किमी. का अतिरिक्त विहार

२४ नवम्बर। महातपस्वी आचार्यवर की इस मेवाड़ यात्रा में ऐसे अनेक प्रसंग आए हैं, जब लंबा मार्ग तय करते हुए भक्तों की आस्थासिक्त भावना को स्वीकार कर भक्तवत्सल आचार्यवर ने उन्हें तृप्त किया। कभी-कभी यह दूरी दस किमी. और उससे भी अधिक रही है। यद्यपि आज का विहार आठ किमी. ही था, किन्तु मार्ग से ढाई किमी. भीतर स्थित झबरकिया गांव के मात्र एक तेरापंथी परिवार की भावना को पूर्ण करने के लिए पूज्यप्रवर वहां पधारे। आचार्यवर की इस कृपावृष्टि में अभिस्नात बंशीलालजी पीतलिया का परिवार अत्यन्त आह्लादित था। आचार्यवर उनके घर में पधारे और उन्हें उपासना कराई। बंशीलालजी ने बताया--हमारे गांव में प्रथम बार किसी आचार्य का पदार्पण हुआ है। घर के बाहरी चौक में बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को आचार्यवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। अनेक ग्रामीणों ने बीड़ी, गुटखा, तम्बाकू आदि का परित्याग किया।

नोट नहीं, खोट दो

झाबरकिया गांव में सुखराम जाट नाम का एक भाई हाथ में थाली लेकर आचार्यवर के निकट आया। उस थाली में २५०० रुपये रखे हुए थे। आचार्यवर के चरण स्पर्श करते हुए चौधरी सुखराम उस थाली को पूज्यचरणों के निकट रखकर जाने लगा। आचार्यवर ने उसे रोका और समझाते हुए कहा--'भाई! हम रुपये नहीं लेते। क्या तुम नशा करते हो?' भाई ने स्वीकृति में अपना सिर हिलाया। पूज्यवर ने पूछा--'बीड़ी पीते हो?' उसने कहा--'नहीं।' पूज्यवर ने पुनः पूछा--'शराब पीते हो?' उसने कहा--'हां, मैं बीयर पीता हूं।' पूज्यवर ने कहा--'क्या तुम इसे छोड़ सकते हो?' उसने कहा--'आप कहें तो मैं छोड़ दूंगा।' आचार्यवर ने उसे शराब पीने का परित्याग करवा दिया। इस प्रकार वह अपने नोट पुनः ले गया और अपनी खोट श्रीचरणों में चढ़ा गया।

अहिंसा यात्रा चित्तौड़ जिले में

झाबरकिया में पदार्पण से पूर्व आचार्यवर ने भीलवाड़ा जिले से कुछ दिनों के लिए चित्तौड़गढ़ जिले में प्रवेश किया। श्रद्धालुओं ने जोश के साथ अपने जिले की सीमा पर पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। सांवरिया गोशाला का स्पर्श करते हुए आचार्यप्रवर मार्गवर्ती रेवाड़ा गांव के गुरुकुल शिक्षण संस्थान में पधारे। यहां एक संक्षिप्त कार्यक्रम में पोखरना परिवार की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। पूज्यवर ने बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को धार्मिक संबोध प्रदान किया। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने बीड़ी, तम्बाकू आदि का परित्याग किया। गांव का एकमात्र तेरापंथी पोखरना परिवार पूज्यवर के पदार्पण से हर्षाप्लावित था। आचार्यवर

ने परिवार को उपासना का अवसर प्रदान कर धार्मिक प्रेरणा दी और परिवार के तीनों भाइयों के घरों का भी स्पर्श किया। इस प्रकार आज तेरह किमी. से अधिक का विहार कर आचार्यवर लगभग ग्यारह बजे मान्यास के स्थानीय राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। पूज्यवर का आज का प्रवास यहीं हुआ।

आचार्यवर का स्वागत कर मान्यास गांव के आबालवृद्ध प्रफुल्लित थे। सर्वत्र उत्सव का-सा माहौल दृष्टिगोचर हो रहा था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में उदयपुर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री शांतिलाल सिंघवी ने अपने पैतृक गांव में आचार्यवर का स्वागत किया। क्षेत्र के पूर्व विधायक श्री अर्जुन जिनगर ने चित्तौड़गढ़ जिले में आचार्यवर का स्वागत करते हुए जिले में प्रवास के दौरान प्रतिदिन दर्शन करने का संकल्प व्यक्त किया। राशमी के पूर्व प्रधान श्री शिवशंकर दाधीच ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अहिंसा एक ऐसा धर्म है, जो शाश्वत है। हिंसा का मार्ग अशान्ति और ह्रास की ओर ले जाता है। अहिंसा की प्रतिष्ठापना वहीं हो सकती है, जहां अनुकंपा की चेतना का विकास होता है। हमारी अहिंसा यात्रा का मुख्य लक्ष्य भी यही है। किसी को चित्त समाधि मिले, वैसा प्रयास करें। किन्तु किसी को कष्ट न पहुंचाएं। यदि अहिंसा धर्म जीवन में अवतरित हो जाता है तो आत्मा एक सुन्दर बगिया बन जाती है।' आचार्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

मान्यास में तीन तेरापंथी परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यप्रवर ने उनके घरों का स्पर्श किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर की प्रेरणा से बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने नशामुक्त रहने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के पश्चात स्थानीय तेरापंथी परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

राशमी में भव्य स्वागत

२५ नवम्बर। आज पूज्य आचार्यवर ने प्रातः मान्यास से राशमी के लिए विहार किया। मार्गवर्ती सांकली गांव में पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। मध्यवर्ती सोमी गांव में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। इस गांव में तीन स्थानकवासी जैन परिवार हैं। आचार्यवर की सन्निधि प्राप्त कर ग्रामवासियों ने कृतार्थता की अनुभूति की। संक्षिप्त कार्यक्रम में आचार्यवर ने जनता को धार्मिक पाथेय प्रदान किया। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने बीड़ी, गुटखा, तम्बाकू आदि के सेवन का परित्याग किया। आचार्यवर स्थानीय तीनों जैन घरों में भी पधारे। यहां से प्रस्थान कर आचार्यवर बनास नदी के ऊपर बने पुल से होते हुए राशमी पधारे। अहिंसा यात्रा के साथ आचार्यवर का पदार्पण न केवल तेरापंथी, अपितु अन्य जैन और जैनेतर लोगों के लिए भी हर्षोल्लास का विषय बना हुआ था। विभिन्न समुदाय और वर्गों द्वारा लगाए गए स्वागत द्वार और उन पर लिखे गए भावपूर्ण शब्द उनकी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दे रहे थे। जनता की भावपूर्ण अभिवंदना को स्वीकार करते हुए पूज्य आचार्यवर स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एवं मंत्री मुनिश्री के प्रेरक अभिभाषण हुए। कोटा के श्रम न्यायाधीश श्री प्रकाशजी पगारिया ने अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी। प्रदेश भाजपा के महामंत्री एवं चित्तौड़ के पूर्व सांसद श्रीचन्दजी कृपलानी ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए कहा--'यदि देश को पुनः विश्वगुरु बनना है तो पूज्य आचार्यश्री का पथदर्शन हमें स्वीकार करना होगा। आपके बताए गए मार्ग पर चलकर ही देश सफल और सशक्त बन सकता है।'

चित्तौड़ के जिला कलक्टर श्री रवि जैन ने कहा--'आचार्यवर के दर्शन कर मैं तो धन्य हुआ ही, आपका पावन स्पर्श पाकर समस्त चित्तौड़ की धरा धन्य हो गई। आपका पवित्र आगमन यहां के लिए वरदायी सिद्ध होगा।'

परमाराध्य आचार्यवर ने संबोधि के सातवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को जाति, कुल, रूप, बल, ज्ञान, ऐश्वर्य, लाभ और तप का अहं न करने की प्रेरणा प्रदान की और राशमीवासियों को रश्मि के दो अर्थ (प्रकाश की किरण और लगाम) बताते हुए उन्हें जीवन की लगाम अपने

हाथ में रखने और जीवन को ज्ञान-रश्मियों से प्रकाशित करने हेतु अभिप्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

राशमी में आठ तेरापंथी परिवार सहित लगभग अस्सी जैन परिवार हैं। मध्याह्न में तेरापंथी परिवारों और अनेक अन्य जैन परिवारों को पूज्यवर ने उपासना करवाई और उन्हें धार्मिक पाथेय प्रदान किया। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यवर ने अधिकांश जैन घरों का स्पर्श किया। इस दौरान आचार्यवर स्थानीय तेरापंथ भवन में पधारे और भवन के दोनों तल का अवलोकन किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर का रात्रिकालीन प्रवास स्थानकवासी श्री सोहनलालजी पोखरना के निवास पर रहा।

सत्यवादी का होता है विश्वास

२६ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आज प्रातः राशमी के तेरापंथी श्रावकों के अनुरोध पर उनके घरों में पुनः पधार कर उनकी भावना को तृप्त किया। अनेक अन्य लोगों के घर भी पूज्य चरणों के स्पर्श से पावन बने। राशमी से चटावटी की ओर विहार के दौरान राशमी की सरपंच श्रीमती रेखा व्यास ने काफी दूर तक पैदल चलकर पूज्यवर की उपासना का लाभ लिया। मार्गवर्ती गंदरप और भोपालाई गांव में पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। भीमगढ़ के बाहर की ओर स्थित वीर तेजाजी मंदिर में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। यहां बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यवर ने जनता को संबोध प्रदान करते हुए कहा--'हमारा कल का प्रवास यहीं (भीमगढ़) है। आप लोग कल की तैयारी करें। जो लोग नशा करते हैं, वे उसे छोड़ने का मानस बनाएं और कल जब हम यहां आएं तो नशा छोड़ने का संकल्प स्वीकार करें।'

आचार्यवर १२.०७ किमी. का विहार कर चटावटी पधारे। पूज्यवर की मंगल सन्निधि प्राप्त कर ग्रामवासी धन्यता की अनभूति कर रहे थे। सर्वत्र प्रसन्नता का वातावरण था। आचार्यवर का प्रवास स्थानीय राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सत्य जीवन में आ जाता है तो एक बड़ी शक्ति, शुद्धि और आत्मबल प्राप्त हो जाता है। व्यक्ति थोड़ी कठिनाइयों को भले ही झेल ले, किन्तु झूठ बोलने से बचने का प्रयास अवश्य करे। क्रोध, लोभ, भय और हास्य झूठ बोलने के मुख्य कारण बनते हैं। व्यक्ति इन कारणों के परिहार का प्रयास करे। जो व्यक्ति सत्य की साधना करना चाहता है, उसे वाणी-संयम का अभ्यास करना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो सत्य की साधना सुगम बन सकती है।'

चटावटी में सात तेरापंथ परिवारों सहित कुल दस जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात परम श्रद्धेय आचार्यवर उनके घरों में पधारे और रात्रि में उन्हें पारिवारिक सेवा का अवसर प्रदान कर धार्मिक प्रेरणा दी। रात्रिकालीन प्रवचन में पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर ने उपस्थित जनता को ध्यान का प्रयोग भी करवाया।

जब विहार तीन का तेरह हुआ

२७ नवम्बर। आज प्रातः लगभग पांच किमी. चलकर पूज्यप्रवर लांगच पधारे। गांव का एकमात्र श्रद्धालु खाब्या परिवार की प्रसन्नता का पार नहीं था। उल्लेखनीय है--इस परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री मांगीलालजी खाब्या ने वर्षों पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ के मर्यादा महोत्सव को देखकर तेरापंथ की गुरुधारणा स्वीकार की और इस कारण खाब्याजी समाज से बहिष्कृत कर दिए गए। किन्तु खाब्याजी ने दृढ़ता का परिचय देते हुए अपनी स्वीकृत आस्था पर आंच नहीं आने दी। आचार्यप्रवर ने सभी जैन परिवारों के घरों में पगल्या किया। वहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में गांव की बहनों ने 'घर कूचां घर मजलां, तारण तिरण जहाज' गीत प्रस्तुत किया। श्री महेन्द्र खाब्या एवं सुश्री कृपा खाब्या के वक्तव्य के बाद आचार्यवर का संक्षिप्त उद्‌बोधन हुआ। आचार्यवर ने कहा--'आज हम मुख्य रूप से मांगीलालजी के लिए लांगच आए हैं।' आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक गांववासियों ने बीड़ी, तम्बाकू, शराब जैसे व्यसनों को छोड़ा। लांगच से पुनः चटावटी होते हुए आचार्यवर भीमगढ़ पधारे। इस प्रकार

पूर्व निर्धारित मात्र तीन किमी. का विहार एक तेरापंथी परिवार की संभाल के लिए करुणामूर्ति आचार्यवर के लगभग तेरह किमी. का हुआ।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में एडवोकेट श्री बंशीलाल लड्ढा ने आचार्यवर के स्वागत में कविता पाठ करते हुए अपनी पुस्तक 'सौ तालों की इक चाबी' पूज्यवर को भेंट की।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'गुरु के पदार्पण से क्षेत्र का भाग्योदय हो जाता है। क्रोध जहर है, मनोविकार है, पागलपन है। इस खतरनाक जहर को अमृत से दूर किया जा सकता है। अहिंसा अमृत है। अहिंसक व क्षमाशील बनकर क्रोध के जहर को निरस्त किया जा सकता है।

परमाराध्य आचार्यवर ने संबोधि के सातवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अदत्तादान ऐसा व्रत है, जो महान जनों द्वारा आचरणीय है। दूसरों की भूमि, वस्तु, धन पर जबरन कब्जा करना, हड़पना व हेराफेरी करना चोरी है। जो दिया हुआ नहीं है, उसे लेना चोरी है। चोरी से पाप कर्म का बंधन होता है। सुकृतकामी को कभी चोरी नहीं करनी चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'जैसे सूर्य की मौजूदगी में अंधकार नहीं टिकता, वैसे ही अचौर्य व्रत वाले व्यक्ति से विपत्ति दूर रहती है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के अन्तर्गत प्रामाणिकता व नैतिकता की बात कही। नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु संत अपनी शक्ति का नियोजन करते हैं।' भीमगढ़ आगमन की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'गुरुदेव तुलसी लगभग छत्तीस वर्ष पूर्व भीमगढ़ और सायं लांगच पधारे। वहां रात्रि प्रवास संपन्न कर पुनः भीमगढ़ पहुंचे। हम भी भीमगढ़ होकर चटावटी और फिर लांगच होकर पुनः भीमगढ़ आए हैं। एक तरह से हमने काफी पुनरावृत्ति की है। भीमगढ़वासियों में ईमानदारी की चेतना जागे और यहां के लोग सदाचार का जीवन जीएं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सामान्यतः दस खुले घरों में लगभग बीस-पचीस लोग निवास करते हैं। आचार्यवर के पदार्पण के अवसर पर लगभग नब्बे चौकों वाले मूल बाईस घरों के लगभग सवा सौ लोग अपने गांव में पहुंचे। स्थानीय लोगों के कथनानुसार तेरापंथी समाज की शत-प्रतिशत उपस्थिति रही। स्थानकवासी समाज के सभी अट्ठाईस घर खुले और प्रायः सदस्य अपने गांव पहुंचे। हजार घरों की बस्ती वाले इस गांव में उत्सव जैसा वातावरण रहा। रात्रि में स्वागत का कार्यक्रम चला। आचार्यवर ने सबको पारिवारिक सेवा करवाई और धार्मिक प्रेरणा प्रदान की। प्रायः सभी जैन परिवारों के घरों का स्पर्श किया। उस समय श्रद्धालु जन मानों गलियों में आचार्यवर के साथ हो गए। पूज्यवर का भीमगढ़ में प्रवास श्री मांगीलाल हिंगड़ के आवास पर हुआ।

भोग पर हो योग का नियंत्रण

२८ नवम्बर। अणुव्रत अनुशास्ता शान्तिदूत आचार्यवर की यात्रा भीमगढ़ से प्रारंभ हुई। पहला पड़ाव जाडाणा का खेड़ा में हुआ। सात तेरापंथी सहित आठ जैन परिवारों वाले इस गांव में आचार्यवर ने सबके घरों में चरण रखे और पारिवारिक सेवा करवाई। वहां से आप लसाड़ियाखुर्द पधारे। गांव में तेरापंथ की एकमात्र श्रद्धालु श्राविका संतोषदेवी गुगलिया ने अपने दत्तक पुत्र भीखमचन्द व पूरे गुगलिया परिवार के साथ पूज्यवर का स्वागत किया। परिवार की बहनों की गीत प्रस्तुति के अनंतर श्री मुकेश गुगलिया ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। संतोषबाई ने पांचसूत्री अणुव्रत संकल्प पत्र पूज्यवर को भेंट किए। आचार्यवर के पदार्पण, प्रवास व प्रवचन से भावविभोर संतोषबाई ने कहा--'गुरुदेव ! आप पधार्‌या म्हारे तो चौमासो हुग्यो।'

जाडाणा व लसाड़ियाखुर्द का संक्षिप्त प्रवास संपन्न कर लगभग दस किमी. का विहार कर आचार्यवर मुरोलीखुर्द पधारे। 'के तो बाबा रामदेवजी के तो बाबा महाश्रमणजी'--रुणेचा के बाबा रामदेव के भक्त बुनकर समाज के इस तरह के बड़े बैनर सहित कई बैनर लगे हुए थे। मुरोली ठिकाणे के ठाकुर श्री नाहरसिंहजी भाटी ने भी आचार्यवर का स्वागत किया। यहां आचार्यवर का प्रवास पीतलिया सदन में हुआ।

रावले के पास चौक में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में गांव के प्रायः सभी वर्गों के लोगों की समवेत उपस्थिति के बीच परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--' अध्यात्म की साधना में ब्रह्मचर्य की साधना का विशेष महत्त्व है। इस साधना के लिए इन्द्रिय संयम एवं मन पर नियंत्रण करना अत्यन्त आवश्यक

है। औरत, पैसा, रूप व सांसारिक भ्रमजाल में फंसा व्यक्ति संन्यासी कहलाने का अधिकारी नहीं है। ब्रह्मचर्यव्रत की साधना के लिए दृष्टि संयम व खाद्य संयम सहयोगी बनता है। ब्रह्मचारी के चरणों में तो देवता भी प्रणत होते हैं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'शीलरहित व्यक्ति के लिए मोक्षरूपी दरवाजा मजबूती के साथ बन्द रहता है। एक मुनि के लिए पूर्ण ब्रह्मचर्य की साधना अनिवार्य है। जबकि एक सद्गृहस्थ के लिए स्वदार संतोष व्रत उपयोगी है। जब इस सीमा का उल्लंघन होता है, वहां पति-पत्नी के बीच दरार उत्पन्न हो सकती है। आज की सबसे बड़ी जरूरत यह है कि भोग पर योग व संयम का नियंत्रण रहे।' आचार्यवर ने मुरोली की जनता से अहिंसा को आत्मसात करने व नशामुक्त जीवन जीने का आह्वान किया। कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का प्रेरक उद्बोधन हुआ।

सायं आचार्यवर ने सभी जैन परिवारों के साथ अन्य भक्तों के घर पगल्या किया। रात्रि में पारिवारिक सेवा करवाई व विविध त्याग-प्रत्याख्यान करवाए।

ऊंचा के लोग ऊंचा जीवन जीएं

२६ नवम्बर। आज प्रातः श्रद्धेय आचार्यवर ने मुरोली से पहुंना के लिए विहार किया। मार्गवर्ती मरमी माताजी मंदिर में पूज्यवर का पदार्पण हुआ। मंदिर प्रबंधन ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। बताया गया कि लकवाग्रस्त लोग यहां स्वास्थ्य की मनौती मांगने के लिए आते हैं। मन्दिर से प्रस्थान कर आचार्यवर मरमी गांव में पधारे। सड़क मार्ग से लगभग एक किमी. भीतर स्थित इस गांव के लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। गांव के विजयवर्गीय गोत्र के परिवारों की श्रद्धा भावना उल्लेखनीय थी। पूज्य आचार्यवर ने उनके घरों का स्पर्श किया।

मरमी के निकटवर्ती जालमपुरा व गोकुल गांव में आचार्यवर ने वहां के लोगों के अनुरोध पर उन्हें संबोधित किया। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने बीड़ी, तम्बाकू, शराब आदि दुर्व्यसनों का परित्याग किया।

इसके पश्चात आचार्यवर ऊंचा गांव में पधारे। गांव के साहू महासभा (तेली समाज), ब्राह्मण समाज, गोस्वामी परिषद, ख्वाजा कमेटी के सदस्यों ने पूज्य आचार्यवर का स्वागत किया। यहां का एकमात्र तेरापंथी ओस्तवाल परिवार अतिशय प्रसन्न था। इस परिवार के वरिष्ठतम सदस्य एक सौ एक वर्षीय श्री हरकलालजी ओस्तवाल पूज्यप्रवर के दर्शन कर प्रमुदित थे। वे तेरापंथ के चार आचार्यों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले बन गए। श्री राजेन्द्र ओस्तवाल ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए।

बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामवासियों को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए आचार्यवर ने ऊंचा गांव के निवासियों को अपने गांव के नाम के अनुरूप अपने जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर की प्रेरणा से गांव के अनेक लोगों ने नशे से मुक्त होने का संकल्प व्यक्त किया और त्याग के फलस्वरूप देखते ही देखते वहां गुटखा के पाउचों और बीड़ी के बंडलों का ढेर लग गया। पूज्य आचार्यवर यहां के रावले में भी पधारे। वहां ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी ने आचार्यवर का 'मुजरो' किया।

इस प्रकार एक ही दिन में अनेक गांवों का स्पर्श करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर ने लगभग सवा दस बजे पहुंना गांव में प्रवेश किया। गांव में पूज्यप्रवर का ऐतिहासिक स्वागत हुआ। यहां के कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट देखें आगामी विज्ञप्ति में।

स्मृति-संबल

- सरदारशहर निवासी श्रीमती बैद का स्वर्गवास हो गया। वे सरदारशहर के सुप्रसिद्ध मंगलचन्द भंवरलाल बैद परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री जंवरीमल बैद की धर्मपत्नी थीं। इस परिवार की दवाओं के दान की उत्कट भावना रही है। लंबे समय से आज भी वह क्रम अनवरत चल रहा है। जंवरीमल बिना डॉक्टरी पढ़े भी किसी डिग्रीधारी डॉक्टर से कम नहीं थे। चिकित्सा के क्षेत्र में उनका दीर्घकालिक अनुभव था। उनके बड़े भाई भंवरलालजी विद्याप्रेमी थे। उन्हें हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत का गहरा ज्ञान था। अनेक साधु-साध्वियों को उन्होंने अध्यापन कराया। परिवार धार्मिक और प्रतिष्ठित है। श्राविकाजी बड़ी धर्मनिष्ठ

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

थीं। उनके सुपुत्र डॉ. जतन बैद भी निष्ठा से सेवा करते हैं।

- नोखामंडी निवासी श्रीमती कानीदेवी सुराणा (धर्मपत्नी-स्व. लालचन्दजी सुराणा) का स्वर्गवास हो गया। अन्तिम समय में उन्हें साध्वी काव्यलताजी का योग मिला और ग्यारह मिनट का उन्हें संथारा आया। मुनि नयकुमारजी एवं साध्वी आशावतीजी उनके संसारपक्षीय परिवार से संबद्ध हैं। कानीदेवी धार्मिक वृत्ति वाली श्राविका थीं। उन्होंने दो वर्षीतप सहित एक से नौ तक की लड़ी व अन्य तपस्याएं कीं। पिछले पचीस वर्षों से रात्रि चौविहार, नवकारसी व पांच सामायिक का उनका नित्यक्रम था। आजीवन जमीकन्द और पांच तिथियों को हरियाली का त्याग था। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- थामला निवासी श्रीमती झमकूदेवी सोनी (धर्मपत्नी-स्व.सोहनलालजी सोनी) का स्वर्गवास हो गया। वे बारहव्रत धारिणी धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। पति-पत्नी दोनों के मन में संघ व संघपति के प्रति गहरी निष्ठा थी।
- लाडनूं निवासी श्रीमती अमानदेवी सिंघी (धर्मपत्नी-स्व. लिखमीचन्दजी सिंघी) का देहावसान हो गया। वे श्रद्धाशील एवं धर्मपरायण श्राविका थीं। बचपन से ही माता-पिता के साये से बंचित होने के बावजूद उनकी धर्मनिष्ठा उल्लेखनीय थी। मात्र बारह वर्ष की उम्र से जमीकन्द सेवन, पांच तिथियों को हरियाली, रात्रि भोजन का परिहार व नवकारसी, संतदर्शन, सामायिक, जप आदि उनका नित्यक्रम था। यह उनके द्वारा प्रदत्त संस्कारों का ही प्रभाव है कि परिवार के उच्च शिक्षित उनके पुत्र-पौत्र आदि संस्कारी और व्यसनमुक्त हैं। श्राविकाजी को कहानी और ढालें सुनाने का शौक था। सैंकड़ों ढालें और थोकड़े उन्हें कंठस्थ थे। अध्यक्ष के रूप में उन्होंने लाडनूं महिला मंडल को गति व ऊर्जा प्रदान की। अस्वस्थता की स्थिति में महाश्रमणीजी के संदेशों से उन्हें बहुत बल मिला।
- छापर निवासी श्रीमती धन्नीदेवी सेठिया (धर्मपत्नी-स्व. चौथमलजी सेठिया) का अहमदाबाद में स्वर्गवास हो गया। पांच वर्ष पूर्व आचार्य महाप्रज्ञ से 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त श्रीमती धन्नीदेवी सेठिया सेवाभावी श्राविका थीं। उनके परिवार की ओर से प्रतिवर्ष 'जय तुलसी विद्या पुरस्कार' प्रदान किया जाता है। पूरा सेठिया परिवार धार्मिक भावना से ओतप्रोत है। इस परिवार के लगभग सौ सदस्य देश के विभिन्न संभागों में व्यवसायरत एवं संघ सेवा में तत्पर हैं।
- इन्दौर निवासी श्री रणजीतमलजी गादिया का निधन हो गया। मूल पेटलावद निवासी गादिया परिवार श्रद्धाशील परिवार है। रणजीतमलजी ने वर्षों तक अध्यक्ष के रूप में तेरापंथी सभा को अपनी सेवाएं दीं। पलासिया स्थित नये तेरापंथ भवन के निर्माण में भी उनका योगदान रहा। उनके भवन 'गुरुकृपा' में साधु-साध्वियों के चतुर्मास हुए। उनकी धर्मपत्नी, पुत्र और पुत्रवधू में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- जसोल निवासी मुम्बई प्रवासी कुमारी हेमलता भंसाली (सुपुत्री श्री गौतम भंसाली) का बाईस वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। अन्तिम समय में अत्यन्त शारीरिक वेदना की स्थिति में भी वह 'ऊं भिक्षु जय भिक्षु' के जप में तल्लीन रही। कुछ माह पूर्व रींछेड़-कांकरोली के बीच मार्ग-सेवा का लाभ लिया। प्रतिभासंपन्न हेमलता साध्वी संगीतप्रभाजी की संसारपक्षीया भतीजी, साध्वी उदितयशाजी की ममेरी बहन व मुमुक्षु भावना की ज्येष्ठ भगिनी थी।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर चिकित्सा सेवा का विश्व कीर्तिमान

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन मुम्बई द्वारा एक ही दिन में एक ही स्थान पर २९० पाइल्स पीड़ितों के निःशुल्क आप्रेशन करवा कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया गया। २० नवम्बर २०११ को 'विश्व पाइल्स दिवस' पर डॉ. जी. डी. पॉल फाउण्डेशन द्वारा संचालित वाई. एम. टी. आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज से जुड़े अस्पताल में समायोजित इस विशाल उपक्रम हेतु ४१२ पाइल्स पीड़ितों को

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**

अन्तिम सप्ताह का महत्वपूर्ण कार्यक्रम (882)

(गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' की संपादक साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की कमल से)

16 जून 1997 के दिन गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी ने अपन डायरी लिखी। उसे बाद डायरी के पन्ने खाली हैं। उस दिन की डायरी में उल्लेख है कि 15 जून की रात्रि में नींद नहीं आई। नींद आ जाती है तो मस्तिष्क का वह हिस्सा काम करना बन्द कर देता है, जो विचारों की तरंगे प्रवाहित करता है। नींद नहीं आती है तो वह भाग सक्रिय रहता है। उस स्थिति में मनुष्य कुछ-न-कुछ सोचता रहता है। उस सोच का आधार सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकते हैं। शारीरिक, मानसिक या भावात्मक स्थितियों से आहत व्यक्ति की सोच प्रायः नकारात्मक होती है। किन्तु अध्यात्म के हिमालय पर पहुंचकर उसके उच्चतम शिखरों की यात्रा करनेवाले महापुरुषों को निषेधात्मक भाव छू भी नहीं पाते। यही कारण है कि प्राकृतिक चिकित्सा से यथेष्ट लाभ का अनुभव न होने पर भी गुरुदेव के मन में संलेखना/संथारा जैसे उदात्त भावों का उद्भव हुआ।

प्रस्तुत सन्दर्भ में एक सवाल खड़ा होता है कि गुरुदेव ने अपने जीवन के बारे में इतना बड़ा और गहरा चिन्तन किया। पर इस विषय में किसी को सूचित क्यों नहीं किया? इससे भी अधिक विचारणीय प्रश्न यह है कि उन्होंने जिनके साथ अद्वैत स्थापित कर रखा था, जिनको अपना मनोनीत उत्तराधिकारी घोषित कर रखा था और इससे भी आगे जिनको आचार्य पद पर अभिषिक्त कर चुके थे, उन आचार्य महाप्रज्ञ से इस बिन्दु पर परामर्श करना तो दूर, चर्चा तक नहीं की। इसका कारण क्या हो सकता है?

उक्त जिज्ञासा का समाधान खोजते समय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के विचारों पर मेरा ध्यान केन्द्रित हुआ। उन्होंने लिखा है 'इसका एक कारण यह है कि गुरुदेव अपने स्वास्थ्य की जटिल स्थिति मेरे सामने रखना नहीं चाहते थे। सन् 1982 राणावास चातुर्मासिक प्रवास के समय एक मिथ्या अफवाह ने एक सन्देह पैदा कर दिया '22 जुलाई 1982 को प्रातः नौ बजे तक ही गुरुदेव के दर्शन हो सकेंगे।' उस समय मेरी मनःस्थिति बहुत जटिल हो गई थी। गुरुदेव ने उसे देखा और कहा 'तुम इस प्रकार विचलित कैसे हो गए?' उसके बाद स्वास्थ्य सम्बन्धी जटिलता की बात मुझे नहीं बताते थे। साधारण-सी बात बता दी जाती।'

एक अन्य कारण की चर्चा करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने लिखा 'दूसरा कारण यह हो सकता है कि 'बोथरा भवन' मैं प्रातःकाल जाता और पांच-दस मिनट वहां ठहरता। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सामान्य-सी चर्चा होती और मैं पुनः 'तेरापंथ भवन' लौट आता। संभवतः गुरुदेव ने सोचा होगा 'तेरापंथ भवन' में जाने के बाद इस विषय में महाप्रज्ञ से चर्चा करेंगे। यह विश्वास नहीं था कि आकस्मिक ढंग से हृदय अपना काम करना बन्द कर देगा। जो कुछ हुआ, आकस्मिक हुआ। इसलिए इस विषय में चर्चा करने का अवकाश ही नहीं रहा।'

मेरी अपनी कल्पना के अनुसार दूसरा संभावित कारण यह हो सकता है 16 जून को प्रातः डॉ. मरोठी, वैद्य महावीरप्रसादजी, वैद्य बद्रीप्रसादजी, अनोपचन्दजी बोथरा आदि अपने निर्धारित क्रम के अनुसार गुरुदेव के उपपात में पहुंचे। गुरुदेव ने शायद उनके सामने स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार न होने की बात की तो डॉक्टर और वैद्यों ने सुझाव दिया कि एक सप्ताह तक चिकित्सा का क्रम इसी प्रकार चलाकर देखा जाए। वैद्यों की राय के आधार पर ही गुरुदेव ने एक सप्ताह प्रतीक्षा करने का मानस बनाया हो, ऐसा प्रतीत होता है।

16 जून को दिन में स्वास्थ्य में कुछ सुधार परिलक्षित हुआ, जिसका उल्लेख डायरी में किया गया है। किन्तु उस तात्कालिक सुधार से गुरुदेव का मन आश्वस्त नहीं हुआ। इसीलिए उन्होंने यह भी लिख दिया कि दो-चार दिन ठीक रहने से ही विश्वास जम सकेगा।

मुनिश्री मधुकरजी, मुनिश्री बालचन्दजी आदि कुछ मुनि गुरुदेव के विशेष परिचारक थे। वे उनके निकट रहनेवाले और पास में सोनेवाले थे। रात्रि के समय स्वास्थ्य में कोई उतार-चढ़ाव आता, उसके बारे में प्रातःकाल सूचना उन्हीं से मिलती थी। पर उनके सामने भी कभी संथारे का आशय प्रकट नहीं हुआ। मैं स्वयं भी प्रतिदिन तीन बार 'बोथरा भवन' जाती थी और गुरुदेव के उपपात में बैठने का अवसर पाती थी। किन्तु अव्यक्त रूप में भी इस प्रकार का अहसास नहीं हुआ कि उनका मनोमंथन किस दिशा में चल रहा है।

एकान्तवास के दो सप्ताह में गुरुदेव ने एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य अवश्य किया, जिसकी अनेक चिन्तनशील लोगों को प्रतीक्षा थी। वह कार्य था उनकी आत्मकथा के सन्दर्भ में कतिपय विशेष व्यक्तियों एवं प्रसंगों को

लिपिबद्ध करवाना। उन दिनों प्रायः आधा-पौन घंटे तक गुरुदेव धाराप्रवाह बोलते जाते और मैं लिखती रहती। उसके बाद मैं कलम रोक लेती और गुरुदेव को विश्राम करने के लिए निवेदन करती। कई बार ऐसा प्रतीत होता कि वे थकान महसूस कर रहे हैं और निवेदन के तत्काल बाद कायोत्सर्ग करने के लिए उद्यत हो जाते। पर कई बार उनकी इच्छा कुछ अधिक समय तक डिक्टेशन देने की रहती। मैं अपना निवेदन दोहराती तो गुरुदेव फरमाते 'तेरापंथ भवन जाने के बाद इतना समय मिलना मुश्किल होगा। तुम यहां जितना काम कर सको, करती रहो। जितना लिख सको, लिखती रहो।' इस कथन के पीछे उनका कोई विशेष अभिप्राय था अथवा महापुरुषों की वाणी सहज रूप में सच हो जाती है, कुछ कहा नहीं जा सकता। पर 'तेरापंथ भवन' पहुंचने के बाद इस कार्य के लिए समय मिला ही नहीं, यह इस बात का स्वयंभू प्रमाण है।

20 जून को जलगांव से महाराष्ट्र के वाणिज्य मंत्री श्री सुरेश दादा जैन, शाकाहार सदाचार समिति के संस्थापक श्री रतनलाल बाफणा आदि दर्शन करने आए। जैन एकता के विषय में चर्चा हुई। जैन अल्पसंख्यक की कोटि में जाएं या नहीं, इस विषय पर संवाद हुआ। गुरुदेव ने कहा 'जैनधर्म मूलतः भारतीय धर्म है। हिन्दू भारतीय समाज और राष्ट्रीयता का प्रतिनिधि शब्द है। इसलिए जैन सामाजिक दृष्टि से हिन्दू हैं, पर धार्मिक दृष्टि से जैन हैं। हिन्दू नाम का कोई धर्म नहीं है। इसलिए बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक की परिभाषा पर विचार करना जरूरी है।' वार्तालाप के दौरान यह प्रसंग भी आया कि इस विषय में जैन समाज के चारों सम्प्रदायों के प्रतिनिधि श्रावकों की एक गोष्ठी की जाए, जिसमें मुक्तभाव से चिन्तन चले। चिन्तन के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाए। सुरेश दादा ने कहा 'यह प्रस्ताव अच्छा है। मैं इस गोष्ठी के समायोजन का प्रयत्न करूंगा। उसमें जैन समाज के प्रमुख व्यक्तियों को आमंत्रित करने और उन्हें लाने का दायित्व मेरा होगा।'

व्यक्तिगत वार्तालाप के बाद गुरुदेव प्रवचन पंडाल में पधारे। समणीवृन्द के मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री टी. एम. लालानी ने आगन्तुक महानुभावों का परिचय दिया और साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया।

रतनलालजी बाफणा ने अपने वक्तव्य में कहा 'आज मनुष्य का विकृत होता खान-पान चिन्ता का विषय है। यद्यपि बाहर जो हिंसात्मक अत्याचार हो रहे हैं, वे हमें कम्पित करनेवाले हैं। किन्तु एक बार अपने देश में हो रही हिंसा की ओर ध्यान केन्द्रित करना है। महावीर, बुद्ध और गांधी के देश में हिंसात्मक वातावरण बनना अच्छी बात नहीं है। मांसाहार हिंसा है। पर केवल यही हिंसा नहीं है। प्रतिदिन उपयोग में आनेवाली वस्तुओं में कितनी हिंसा होती है, यह चिन्तन का विषय है। प्रसाधन सामग्री, खाद्य पदार्थ, कपड़े और अन्य कीमती सामान पशुओं को मारकर बनाया जा रहा है। मैं पूज्य गुरुदेव और आचार्यश्री से निवेदन करता हूं कि आपकी वाणी में तेज है, ओज है। आप लाखों लोगों को बदलने की क्षमता रखते हैं। मेरा विश्वास है कि इस देश की जनता को आप जैसे महापुरुष ही हिंसा से उबार सकते हैं।'

वाणिज्यमंत्री श्री सुरेश दादा ने कहा 'तीन वर्षो के बाद आज मेरी भावना फलवान बनी है। तीन साल पहले मैंने सोचा था कि प्रतिवर्ष पूज्य गुरुदेव के दर्शन करूंगा। मन में आन्तरिक भक्ति-भावना होते हुए भी मैं दर्शन नहीं कर सका। मुझे लगता है कि राजनीति में दिए जानेवाले आश्वासन का असर मेरे संकल्प पर भी आ गया। कल मैं जैनविश्वभारती, लाडनूं गया था। विश्वभारती का अवलोकन कर मन प्रसन्नता से भर गया। अच्छे मनुष्य का निर्माण ऐसे संस्थानों में ही हो सकता है। किसी भी बुराई को मिटाना है तो व्यक्ति-सुधार की प्रक्रिया को अपनाना होगा। संस्कार-निमाण का कार्य बच्चों से प्रारंभ करना होगा। मैं युवकों से कहना चाहता हूं कि वे अपना आदर्श किसी नेता या अभिनेता को नहीं, बल्कि पूज्य गुरुदेव एवं आचार्यश्री जैसे सन्तों को मानें।'

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने अभिभाषण में कहा 'दुनिया बहुत बड़ी है। उसे एक व्यक्ति कैसे समझ सकता है। समस्याओं का आयतन उससे भी बड़ा है। वैदिकों की मान्यता है कि पूर्ण से पूर्ण निकालें, शेष पूर्ण ही रहेगा। जैन दर्शन के अनुसार अनन्त में से अनन्त निकालो, शेष अनन्त ही रहेगा। समस्याओं से बने इस चक्र को देखकर हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठा जा सकता। आवश्यक है कि उसको सुलझाने में हम अपने पराक्रम और सूक्ष्म ज्ञान का उपयोग करें। पराक्रम के मामले में भारत सदा अग्रणी रहा है। पर प्रोद्योगिकी में पीछे रहने से ही इसे हार का सामना करना पड़ा है। शाकाहार जैन दर्शन का मुख्य सिद्धान्त है। भगवान महावीर ने मांसाहार

का विरोध उस समय किया, जब श्रमण संस्कृति के अनुयायी बौद्धधर्म में यह निषिद्ध नहीं था। वर्तमान में देश-विदेश में सभी जगह शाकाहार की प्रतिष्ठा बढ़ी है। आज के वातावरण को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो भगवान महावीर का पुनर्जन्म हो रहा है।'

गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी ने विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा 'आज मैं लगभग दो सप्ताह के बाद प्रवचन सभा में आया हूं। इसमें निमित्त बने हैं जलगांव से आए हुए हमारे जैन बन्धु। महाप्रज्ञजी ने कहा 'आपको प्रवचन में आना है। मैंने कहा 'आपने निमंत्रण दिया है तो आना ही है। मैं नहीं आता था, फिर भी प्रवचन पंडाल वैसे ही भरा रहता था। सब काम वैसे ही होता था। कमी केवल मेरी ही थी।' इस उत्थानिका के बाद गुरुदेव ने भगवान महावीर के पथ पर चलने का संकल्प व्यक्त करते हुए एक गीत का संगान किया। वह गीत था प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा। तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह से पहले बगड़ी में आचार्य भिक्षु की अभिनिष्क्रमण द्विशताब्दी के अवसर पर गुरुदेव द्वारा प्रगीत यह गीत इतना लोकप्रिय बना कि जन-जन के मुंह पर जम गया। गुरुदेव ने जब इसका संगान किया गया तो हजारों कंठों से निकले स्वरों से पूरा प्रवचन पंडाल थिरकने लगा।

गीत के कुछ पद्यों का संगान करने के पश्चात गुरुदेव ने कहा 'हम प्रभु महावीर के पावन पथ पर चलें, इससे बड़ी बात कोई हो नहीं सकती। भगवान महावीर कोई रूढ़ व्यक्ति नहीं थे, वे जीवन्त व्यक्ति थे, इसलिए पचीस सौ वर्ष बाद भी नित्य नवीन और प्रासंगिक लग रहे हैं। उनका मन्तव्य था सत्य को सदा खोजते रहो, नया रास्ता निकालते रहो। उन्होंने विचार का दरवाजा कभी बन्द नहीं किया। उन्होंने कहा 'तुम सोचो, विचारो और नया मार्ग खोजो।' हमें इस महावीर-वाणी का आधार मिला। इसी आधार पर हम नया सोचते-विचारते रहे हैं, नया खोजते रहे हैं। हम कुछ-न-कुछ करते रहे हैं, इसीलिए हमारा क्रम प्रायोगिक बन गया है। केवल जनता की भीड़ में हमारा विश्वास नहीं है, प्रयोग में विश्वास है। हमने नए-नए प्रयोग किए। जहां कहीं सत्य मिला, हमने शिरोधार्य कर लिया। अपने दिमाग के दरवाजे को सदा खुला रखा जाए तो सत्य को समझना/पाना आसान हो जाता है।'

जैन और जैनत्व के प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए गुरुदेव ने कहा 'धर्म के मामले में धार्मिक लोग भी रूढ़/जड़ बन गए हैं। जिस कुल में व्यक्ति जन्म लेता है, वह उस धर्म के साथ जुड़ जाता है। क्या जन्म से कोई धर्म होता है? एक जैन कुल में किसी बैल ने जन्म लिया, क्या वह जैन हो गया? तेरापंथ कुल में जन्म लिया, क्या वह तेरापंथी हो गया? वह जन्म से जैन या तेरापंथी हो सकता है। पर वास्तव में तो उसे कर्म से जैन या तेरापंथी बनना होगा। बहुत वर्षो पहले जोधपुर के रोटरी क्लब में हमारा प्रोग्राम था। एक पत्रकार ने पूछा 'जैनों की संख्या इतनी कम क्यों है?' मैंने पूछा कितनी है? पत्रकार बोला 'जनगणना के अनुसार तीस-चालीस लाख होगी।' मैंने कहा वे भी जन्मना जैन हैं। जैन कुल में जन्म ले लिया, इसलिए जैन कहलाते हैं। पत्रकार विस्मय के साथ बोला 'तब तो जैन बहुत कम हैं।' मैंने इस कथन के साथ असहमति प्रकट की तो पत्रकार ने जिज्ञासा की 'यह कैसे हो सकता है?' मैंने कहा आप चौंकिए मत। एक दृष्टि से विचार किया जाए तो अजैनों में जैन ज्यादा हैं। वे त्याग से, वैराग्य से, भावना से और विवेक से जैन हो सकते हैं। पत्रकार ने कहा 'तब तो ठीक है।' मैंने कहा यह मान लिया गया कि जिस कुल में जन्म लिया, वह धर्म हमारा है। यह भूलभरी भ्रान्ति है। हम जन्म से नहीं, कर्म से धार्मिक बनें। अपना सत्य स्वयं खोजें अप्पणा सच्चमेसेज्जा। खैर, मैं अधिक बोलने नहीं आया हूं। एक व्यक्ति की कमी थी, उसे पूरा करने आया हूं। आ गया हूं तो कुछ कहना ही है।'

प्रवचन को एक मोड़ देते हुए गुरुदेव ने कहा 'कल्याण के दो रास्ते हैं स्वयं का प्रकाश और स्वयं का संयम। ये दोनों चीजें नहीं हैं तो क्या होता है? इस स्थिति का चित्रण करनेवाला एक मार्मिक श्लोक है

शृण्वन्ति ये नैव हितोपदेशं, न धर्मलेशं मनसा स्मरन्ति।
रुजः कथंकार मथापनेयास्तेषामुपायस्त्वयमेक एव ॥

जो मनुष्य धर्मोपदेश को सुनते ही नहीं और न धर्म के लेश का भी मन से स्पर्श करते हैं, उनके मानसिक और भावनात्मक रोग कैसे दूर किए जा सकते हैं? जबकि उन रोगों को दूर करने का एकमात्र उपाय है हितोपदेश का श्रवण और धर्म का आचरण।'

प्रवचन के उपसंहार में गुरुदेव ने कहा 'आज मैं कुछ अधिक बोल गया हूं। मैंने सोचा पन्द्रह दिनों से बोल रहा हूं तो दो-चार मिनट ज्यादा बोल दूं। इतनी बड़ी परिषद शान्ति से बैठी है, यह श्रद्धा भावना का परिणाम है। जनता में श्रद्धा बढ़ती रहे, यह अपेक्षा है। मूल बात यह है कि मनुष्य को मनुष्य बनाने का प्रयत्न किया जाए। सब लोग मानवता को आगे बढ़ाएं, इन्सानियत को आगे बढ़ाएं और पर्यावरण की समस्या को सुलझाएं। आप तेरापंथी हैं या नहीं, जैन हैं या नहीं, किन्तु मैन हैं। मैन हैं तो अच्छे मैन बनें। अच्छे मैन सहज रूप में जैन बन सकते हैं। जैन श्रावक का जीवन कैसा हो? इस सन्दर्भ में आप 'श्रावक-सम्बोध' पुस्तक पढ़ें और उसके अनुरूप जीवन बनाएं। फिर हमें जैनत्व की सुरक्षा के लिए चिन्ता नहीं करनी होगी।'

देश-विदेश में रहनेवाली समाज की किशोरपीढ़ी समय-समय पर गुरुदेव के दर्शन करने आती रहती थी। बच्चों को जैनधर्म के बारे में प्राथमिक जानकारी दी जाती। उनकी जिज्ञासाएं मुखर होतीं। कभी उन्हें गुरुदेव का सान्निध्य मिलता और कभी साधु-साध्वियों के पास प्रश्नोत्तर चलते रहते। गुरु-दर्शन कर लौटते समय उन्हें कहा जाता कि वे जैनधर्म के बारे में अपनी जानकारी बढ़ाते रहें। बच्चे पूछते कि वे कौन-सी पुस्तक पढ़ें, जिससे उनका नॉलेज बढ़ता जाए। इतिहास और दर्शन दोनों विषयों की कई अच्छी पुस्तकें हैं। पर वे किशोरपीढ़ी के लिए उपयोगी नहीं हैं। मर्यादा-महोत्सव के बाद लाडनूं-प्रवास में प्रस्तुत सन्दर्भ में मैंने गुरुदेव से निवेदन किया। गुरुदेव ने इस बात को गहराई से लिया और चिन्तन भी किया कि बालपीढ़ी के लिए उपयोगी एवं रुचिवर्धक साहित्य का निर्माण कैस किया जा सकता है।

गंगाशहर पधारने के बाद गुरुदेव का स्वास्थ्य पूर्ण रूप से अनुकूल नहीं रहा, फिर भी समय-समय पर चिन्तन चलता रहता था। एक दिन गुरुदेव के उपपात में आचार्यश्री महाप्रज्ञ आसीन थे। हम कुछ साध्वियां भी उपस्थित थीं। गुरुदेव ने आचार्यश्री से कहा 'जैन दर्शन पर एक पुस्तक तैयार करनी है। जैसे आमेट में जैनधर्म के बारे में एक श्लोक आदर्शोऽत्र जिनेन्द्र आप्तपुरुषः रत्नत्रयाराधना तैयार किया था, वेसे ही संस्कृत भाषा में बीस-पचीस श्लोकों का निर्माण कर उनकी व्याख्या लिखी जाए। इससे जैन दर्शन के बारे में एक सरल पुस्तक तैयार हो सकती है। रात्रि के समय हम बैठें और यह कार्य हो जाए।'

उन दिनों रात्रि के समय गुरुदेव के शरीर में प्रायः सुस्ती-सी रहती थी। इसलिए प्रस्तुत विचार को भविष्य पर छोड़ते हुए आचार्यश्री ने निवेदन किया 'गुरुदेव का स्वास्थ्य थोड़ा ठीक हो जाए, फिर यह कार्य प्रारंभ किया जाए।'

उपयोगी साहित्य का निर्माण गुरुदेव की रुचि का विषय था। 'श्रावक-सम्बोध' की रचना के बाद गंगाशहर में उन्होंने उसका भाष्य लिखाना भी प्रारंभ किया। किन्तु वह कार्य भी आगे नहीं बढ़ सका। इस विषय में उनकी और भी बहुत कल्पनाएं थीं। पर नियति का योग ही ऐसा बना कि वे साकार नहीं हो पाईं।"

•